4

पूर्व-प्राथमिक केंद्र और अभिभावक

रीतू चंद्रा *

पूर्व-प्राथमिक केंद्र के प्रत्येक अभिभावक की यह अपेक्षा रहती है कि उसका बच्चा केंद्र में बहुत कुछ सीखे। लेकिन कभी-कभी अनजाने में अभिभावक पूर्व-प्राथमिक केंद्र की गतिविधियों में बाधा उत्पन्न कर देते हैं। ऐसे में केंद्र का संचालन कठिन हो जाता है और बच्चों के विकास पर प्रभाव पड़ता है। परंतु यदि अभिभावकों को भी केंद्र की गतिविधियों में शामिल कर लिया जाए तो इनके योगदान से पूर्व-प्राथमिक केंद्रों के कार्यक्रमों को और भी सरल, रोचक और उपयोगी बनाया जा सकता है। यह लेख इसी दिशा में एक छोटा-सा प्रयास है।

पूर्व-प्राथमिक केंद्रों के संचालन में शिक्षिकाओं के सामने प्रतिदिन छोटी-मोटी समस्याएँ आ ही जाती हैं जिससे केंद्र की गतिविधियों में बाधा उत्पन्न होती है। ऐसी ही एक समस्या अभिभावकों से संबंधित है। अक्सर देखा जाता है कि बच्चों के अभिभावक, चाहें वे माता-पिता, भाई-बहन या कोई अन्य, समय समाप्ति से पूर्व ही पूर्व-प्राथमिक केंद्र में आकर अपने बच्चों की छुट्टी की प्रतीक्षा में बैठ जाते हैं। इससे बच्चों का ध्यान उस समय चल रही गतिविधि से हट जाता है जिससे केंद्र के कार्यक्रम पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य को पूरा करने में मुश्किलें आ जाती हैं। लेकिन यदि इन अभिभावकों को केंद्र की गतिविधियों में शामिल कर लिया जाए तो केंद्र के कार्यक्रम पर भी प्रभाव नहीं पड़ेगा, साथ ही इनके सहयोग से गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। नीचे कुछ तरीके दिए जा रहे हैं जिनकी मदद से अभिभावकों को केंद्र की गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है–

अभिभावकों को बच्चों के साथ ही उनकी गतिविधियों में शामिल करना ताकि वे घर पर भी बच्चों को कुछ सिखा सकें। जैसे अभिभावकों की सहायता से

- बच्चों को कविता व बालगीत कराना
- कहानी सुनना, सुनाना और बनाना
- अभिनय कराना

* *सहायक आचार्य,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली -110016

- कठपुतली का खेल कराना
- पहेलियाँ बनाना और बुझाना
- कला की क्रियाएँ करवाना जैसे– चित्र बनाना, कोलॉज कार्य, पत्ती/अँगूठे/रूई/धागे आदि से छपाई, कागज़ चिपकवाना आदि।
- विज्ञान की गतिविधियाँ जैसे– अंकुरण, हल्का व भारी, डूबना व तैरना, वाष्पोत्सर्जन, धूप-छाँव का ज्ञान आदि।

- अभिभावकों को बच्चों के लिए गतिविधियों से संबंधित सामग्री बनाने में शामिल करना। जैसे- खिलौने, कठपुतली, कहानी चार्ट, गुड़िया, गुड़िया का घर व मुखौटे आदि।
- अभिभावकों से बच्चों के लिए केंद्र में मिलने वाली खान-पान की वस्तुओं से बनायी जाने वाली विभिन्न खाद्य-सामग्री बनवाना जैसे– हलवा, खिचड़ी, खीर, जूस, नींबू-पानी आदि। और इन बनी हुई खाद्य-सामग्री को बच्चों में बँटवाना।
- भ्रमण आस-पास के परिवेश की खोजबीन और निरीक्षण का एक शानदार माध्यम है। यह बच्चों में जिज्ञासा, खोज तथा प्रयोग करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे कंकड़, इधर-उधर घूमते पशु, रंग-बिरंगे पक्षी, घोंसले, घर, दुकान, फूल, तितलियाँ आदि बहुत-सी चीज़ें हमारे वातावरण में हैं, जिनका अवलोकन बच्चे भ्रमण के दौरान कर सकते हैं। यह अवलोकन न केवल बच्चों का कौतूहल बढ़ाता है बल्कि वे तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं और ज़वाब पाकर आनंदित भी होते हैं। ऐसे में यदि अभिभावक भी बच्चों के साथ हों तो बच्चे और भी उत्साहित हो जाते हैं।
- महीने में एक-दो बार अभिभावकों के साथ बैठक करने का प्रयास करना, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की जा सकती है–

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा क्या? क्यों? और कैसे?

शिक्षिका द्वारा अभिभावकों को पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य से अवगत कराते हुए बताना कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य है–

- 3-5 वर्ष की आयु के बच्चों का समुचित शारीरिक विकास करना।
- बच्चों में स्थायी बौद्धिक जिज्ञासा जागृत करना।
- बच्चों में अपने विचारों की शुद्धता, स्पष्टता और तारतम्यता के साथ अभिव्यक्त करने के कौशल का विकास करना।
- बच्चों की सृजनात्मक क्षमता का विकास करना।

- बच्चों को पर्यावरणीय सुंदरता के प्रति सजग एवं संवेदनशील बनाना।
- बच्चों में स्वस्थ आदतों का विकास करना।
- बच्चों में दूसरों के प्रति स्नेह, सहयोग, समायोजन एवं शिष्टाचार की भावना का विकास करना।
- बच्चों में शिक्षा के प्रति रूचि जागृत करना।
- शिक्षिका द्वारा अभिभावकों को केंद्र में संचालित विभिन्न प्रकार की गतिविधियों की भी जानकारी दी जा सकती है।

खेल-खेल में शिक्षा –

अभिभावकों को बताना कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में बच्चे बहुत छोटे होते हैं जो अभी पढ़ने-लिखने के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं। उनकी यह उम्र तो बस पढ़ने-लिखने की तैयारी की है वो भी अनौपचारिक रूप से और इसका सबसे अच्छा माध्यम खेल है, इसलिए उन्हें केंद्र में औपचारिक नहीं बल्कि खेल द्वारा ही शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे,

- बच्चों की उंगलियाँ लिखने के लिए तैयार हो जाती हैं।

- बच्चे अच्छी और सही भाषा बोलना सीखते हैं।
- बच्चों में दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनने और समझने की कुशलता बढ़ती है।
- बच्चे आगे की कक्षा में जाने के लिए तैयार होते हैं।
- बच्चे निर्देशों के अनुसार काम करना सीखते हैं।
- बच्चे विभिन्न कार्यों में सहयोग देने लगते हैं।
- बच्चे अपनी बारी का इंतज़ार करना सीखते हैं।
- बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त करना और आवश्यकतानुसार उन पर नियंत्रण रखना सीखते हैं।
- बच्चों में स्व-अनुशासन, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास का विकास होता है।

अभिभावकों का केंद्र के कार्यक्रम में सहयोग–

अभिभावकों को बताना कि यदि वे चाहें तो केंद्र की गतिविधियों में भी निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं, जैसे–

- प्रतिदिन अभिभावकों का केंद्र में आकर केंद्र की गतिविधियों में हाथ बँटाना।
- पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की योजना बनाने में सहयोग करना।
- सस्ती और अनुपयोगी वस्तुओं को जमा करना जिनसे केंद्र के लिए खेल सामग्री बनायी जा सके।

- समुदाय के लिए सभा/बैठक आयोजित करने में सहयोग करना।
- बच्चों को साफ़-सुथरा रखना।
- बच्चों को सही समय पर केंद्र भेजना।
- अभिभावकों द्वारा बाकी माता-पिता को केंद्र के महत्त्व के बारे में बताना तथा बच्चों को केंद्र भेजने के लिए प्रेरित करना।

माता-पिता बच्चों के विकास के लिए घर पर क्या-क्या कर सकते हैं– शिक्षिका द्वारा अभिभावकों को बताना कि वे स्वयं भी घर पर ही अपने बच्चों के विकास में कई प्रकार से सहयोग दे सकते हैं, जैसे–

- बच्चों के साथ बातचीत करके।
- उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर।
- कहानी सुनाकर तथा लोरी और गीत गाकर।
- बच्चों के साथ खिलौने बनाकर उनके साथ खेलकर।
- बच्चों से प्यार का व्यवहार करके।
- केंद्र की गतिविधियों को घर पर बच्चों के साथ दोहराकर।
- बच्चों को बाहर (चिड़ियाघर, संग्रहालय, बागीचा, पोस्ट-ऑफ़िस आदि) घुमाने ले जाकर साथ ही आस-पड़ोस की जानकारी देकर आदि।

बच्चों के विकास से संबंधित मसलों पर चर्चा –

शिक्षिका अभिभावकों के साथ बच्चों के विकास से संबंधित बातों पर चर्चा करे और अपने अनुभव के आधार पर उन्हें सुझाव दे जैसे–

- बच्चों की झिझक कैसे दूर की जाए।
- बहुत चंचल और शरारती बच्चों को कैसे संभाला जाएँ।

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की मदद कैसे की जाए।
- बच्चों में सुरक्षा की भावना एवं आत्मविश्वास कैसे विकसित किया जाए।
- बच्चों को अच्छी आदतें सीखने में कैसे मदद की जाए।
- बच्चों को साफ़-सफ़ाई और स्वच्छता के लिए कैसे प्रेरित किया जाए।

अनुपयोगी वस्तुओं से खेल सामग्री कैसे बनायी जाएँ और यदि खेल सामग्री न हो तो गतिविधियाँ कैसे करायी जाएँ आदि महत्वपूर्ण विषयों पर भी अभिभावकों को सलाह दी जा सकती है।

शिक्षिका अभिभावकों से केंद्र के संचालन में आने वाली समस्याओं पर भी बातचीत करते हुए उन्हें इनका समाधान निकालने के लिए भी प्रेरित कर सकती है।

लेकिन कई बार ऐसा भी देखा जाता है कि अभिभावक न तो पूर्व-प्राथमिक केंद्रों में आते हैं और न ही अपने बच्चों को भेजने में रुचि लेते हैं। अभिभावकों में पूर्व-प्राथमिक केंद्रों के प्रति रूचि उत्पन्न करने के लिए,

- पूर्व-प्राथमिक शिक्षिका पूर्व-प्राथमिक केंद्र में छोटे-छोटे कार्यक्रम या सभाओं का आयोजन अभिभावकों के लिए कर सकती है। यदि संभव हो तो महाविद्यालयों के विभिन्न विभागों जैसे– वस्त्र विज्ञान विभाग, खाद्य एवं पोषण विभाग, पारिवारिक संसाधन विभाग एवं प्रसार शिक्षा विभाग तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों, स्वास्थ्य संस्थाओं के विभिन्न विभागों जैसें– परिवार सेवा क्लीनिक, परिवार सेवा संस्थान आदि के सम्पर्क में रहे और इनसे संबंधित लोगों अथवा डॉक्टरों व मनोवैज्ञानिकों को पूर्व-प्राथमिक केंद्र में बुलाए। ये सभी लोग बिना किसी धनराशि के स्वेच्छा से जनहित में कार्य करते हैं। इनके द्वारा अभिभावकों को उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जानकारी दी जा सकती है। जैसे– परिवार कल्याण, धन कमाना, छोटे-मोटे रोजगार की जानकारी देना, शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, बच्चों का विकास शिक्षा व स्वास्थ्य इत्यादि।
- इसके अलावा शिक्षिका स्वयं भी इन विषयों से संबंधित पोस्टर, चार्ट, फोल्डर लाकर केंद्र में लगा सकती है और अभिभावकों में बाँट सकती है।
- बच्चों के विकास और गतिविधियों से संबंधित फोल्डर, किताबें, चार्ट, पोस्टर तथा बच्चों द्वारा की गयी गतिविधियों के नमूने भी अभिभावकों को दिखाए ताकि उन्हें केंद्र में संचालित गतिविधियों की जानकारी मिल सके।

शिक्षिका के इन प्रयासों से निश्चित रूप से अभिभावक सक्रिय रूप में पूर्व-प्राथमिक केंद्र की गतिविधियों में भागीदार बनेंगे। फलस्वरूप केंद्र में उनकी रूचि जागृत होगी, जिसका एक सुखद परिणाम यह होगा कि वे अपने बच्चों को केंद्र में ज़रूर भेजेंगे और यही हमारा उद्देश्य भी है।

❑❑❑